④

श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

सा विद्या या विमुक्तये — श्री शत्रुंजय-मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

C/o. शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड़, मोंढा रोड, औरंगाबाद (महा.) ४३१ ००१

सम्यग्ज्ञान परिचय

Answer sheet

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

2020-21

ऐनरोलमेन्ट नंबर ______ अभ्यास-4 शहर ______

विद्यार्थी का नाम ______

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	ज्योतिर्मय
(२)	प्रचला-प्रचला
(३)	केवली भगवंतो ने
(४)	आश्रव
(५)	शील
(६)	उपशम
(७)	धन गणिम
(८)	क्षायिक सम्यक्त्व
(९)	जिनशासन
(१०)	वस्त्र
(११)	केवली पर्याय
(१२)	अपर परिगृहीता
(१३)	जैन
(१४)	दाहिना
(१५)	आराधक
(१६)	मोहनिय
(१७)	शासन की प्रभावना
(१८)	हिरण्यवंत क्षेत्र
(१९)	दर्शनोपयोग
(२०)	परिधि

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	औपशमिक
(२)	श्री नेमिनाथ भ.
(३)	दर्शनावरणिय कर्म
(४)	सौधर्मेन्द्र
(५)	कुरुदेश
(६)	दशार्णभद्र राजा
(७)	परिग्रह
(८)	क्षायोपशमिक
(९)	वैशाख सुद-११
(१०)	शील
(११)	द्वारपाल (प्रतिहारी)
(१२)	निस्सिही
(१३)	श्री अजितनाथ भ.
(१४)	परिग्रह
(१५)	थीणद्धि निद्रा
(५)	मधु
(६)	हाथी
(७)	विचित्र
(८)	तलवार
(९)	मदिरा
(१०)	अधिपति
(११)	प्रचला
(१२)	देश को
(१३)	भेद
(१४)	राज्य
(१५)	अनुक्रम से
(१६)	जीव
(१७)	क्षेत्रफल
(१८)	मधुरा
(१९)	वेदनिय
(२०)	घोड़े

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	वैताढ्य
(२)	तत्पश्चात
(३)	रथ
(४)	गजदन्त

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	८	(६)	४
(२)	१०	(७)	2
(३)	६	(८)	५
(४)	९	(९)	१
(५)	७	(१०)	3

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	९९ करोड
(२)	33६८ ४/१९ मी.
(३)	४2
(४)	१०० वर्ष के उपवास
(५)	७
(६)	2४
(७)	४०६५
(८)	९
(९)	९
(१०)	30

प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर	
(१)	×	(१)	22
(२)	×	(२)	१५
(३)	✓	(३)	२१
(४)	×	(४)	७
(५)	×	(५)	४
(६)	×	(६)	९
(७)	✓	(७)	१९
(८)	✓	(८)	१२
(९)	✓	(९)	५
(१०)	×	(१०)	१४

प्रश्न-१ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-२ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-३ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-४ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-५ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-६ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-७ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-८ मिले हुए गुण	=	कुल गुण

रीमार्क ______ जांचनेवाले की सही ______

प्रश्न - ८

१. जिनेश्वर परमात्मा के दर्शन से हजार उपवास का लाभ होता है। जिनपूजा करनेपर पुष्पमाला चढानेपर अनेकगुणा लाभ होता है। चामरनृत्य भावपूजा करने से अनंतगुणा पुण्य प्राप्त होता है। जिनदर्शन से ऐसे अद्भुत लाभ की प्राप्ती होसकती है? हाँ! परमात्मा दर्शन से दर्शन की भावना से, अंतःकरण में, हृदय में जो शुभ और शुद्ध भावों की परंपरा निर्माण होती है वे भाव जैसे-जैसे बढते जाते है, वैसे-वैसे अधिक से अधिक पुण्य की प्राप्ती होती जाती है। जिस जिनदर्शन से मुक्ति सुख की प्राप्ति कराने की ताकत है, उससे प्रचंड पुण्य की प्राप्ति तो सहज है। उसमें शंका का कोई कारण नहिं है।

२. परिग्रह परिमाण के अतिचार → ① क्षेत्र घर, दुकान आदि किये हुए प्रमाण से ज्यादा रखे हो, ② बने हुए गहने या बिना बना हुआ सोना रूपा, आभुषण, सिक्के वगैरह धारे हुए प्रमाण से ज्यादा रखे हो। ③ चारों प्रकार का धन उसमें गणिम यानि सुपारी, नारियल आदि गिनकर बेचे। ④ ~~[illegible]~~ तथा गेहूं, मुंग, उडद वगैरह चौवीस प्रकार का धान्य निश्चित किये हुए प्रमाण से ज्यादा रखे हो। ⑤ तांबा, कांसा, लोखंड वगैरह हल्कि जाति की धातू धारे हुए से ज्यादा रखी हो।

३. दर्शनावरणिय कर्म द्वारपाल के जैसा है। द्वारपाल द्वारा अटकाया व्यक्ती जिस तरह राजा के दर्शन नही कर सकता उसी तरह दर्शनावरणिय कर्म व्यक्ति को वस्तु के सच्चे स्वरूप के दर्शन से वंचित रखता है। पदार्थों का सामान्य बोध दर्शन कहलाता है, दर्शन के चार प्रकार है ① चक्षुदर्शन ② अचक्षुदर्शन ③ अवधिदर्शन ④ केवलदर्शन। एकेन्द्रिय बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय को मूल से चक्षु होते ही नही वह चक्षुदर्शनावरणिय कर्म के उदय से। चउरेन्द्रिय पंचेन्द्रिय को चक्षु होते है पर अंधकार में नहीं दिखता कम दिखाई देना, इन सब में चक्षुदर्शनावरणिय कर्म का उदय ही काम करता है। जीव अनंतदर्शनगुण के कारण योजनों तक की ताकत रखता है पर इस दर्शनावरणिय कर्म के उदय के कारण अमुक अंतर से ज्यादा पहुंच नही पाती।

४. जहाँ असि, मसि और कृषि का व्यवहार चलता हो समाज व्यवस्था हो, राज्यव्यवस्था हो, लग्न-भोजन एवं धर्मव्यवस्था हो उसे कर्मभूमि कहते है। आयुष्य पूर्ण होने पर जीव पाँचो गतियों में जानेवाले होते है। जिस क्षेत्र में उपरोक्त व्यवस्था न हो, युगलिया के रूप में जन्म लेनेवाले भाई बहन पति पत्नी भाव से रहते हो शरीर स्वरूपवंत और लक्षणयुक्त होता हो, जीवन की तमाम भोग उपभोग की सामग्री कल्पवृक्ष से प्राप्त होती हो वह क्षेत्र (युगलिक क्षेत्र) अकर्मभूमि कहलाता है। आयुष्य पूर्ण कर जीव देवलोक में जाते है।

५. कुरुदेश में स्थित हस्तिनापुर के प्रथम राजा, तत्पश्चात जो महाचक्रवर्ति और महा प्रभाविक हुए जो बहत्तर हजार श्रेष्ठ पुर नगर तथा बडी समृद्धिवान दुकानवाले श्रेष्ठ नगर और देशो के पति बत्तीस हजार मुकुटबद्ध राजा जिनके पिछे चलनेवाले है, जो श्रेष्ठ चौदह रत्नो, नौ निधान, चौसठ हजार सुंदर युवतीओं के पति हुए है, ८४ लाख घोडे, ८४ लाख हाथी तथा ८४ लाख रथ के स्वामी हुए है। जो ९६ करोड गांव के स्वामी हुए है। ऐसे भगवान शांतीनाथ इस भरतखंड में हुए थे।